पञ्चम खण्ड

दक्षिणेश्वर-मन्दिर में भक्तों के संग

प्रथम परिच्छेद

मणिमोहन को शिक्षा— ब्रह्मदर्शन के लक्षण— ध्यान-योग

ठाकुर श्रीरामकृष्ण छोटी खाट पर बैठे हुए मसहरी के भीतर ध्यान कर रहे हैं। रात के 7-8 बजे होंगे। मास्टर धरती पर बैठे हुए हैं और उनके एक बन्धु हरिबाबू हैं। आज है सोमवार, 20 अगस्त, 1883 ईसवी। श्रावण की कृष्णा द्वितीया तिथि।

आजकल यहाँ पर हाजरा रहते हैं। राखाल प्राय: ही रहते हैं, कभी-कभी अधर के घर जाकर रहते हैं। नरेन्द्र, भवनाथ, अधर, बलराम, राम, मनोमोहन, मास्टर प्रभृति प्राय: प्रति सप्ताह ही आकर रहते हैं।

हृदय ने ठाकुर की खूब सेवा की थी। गाँव में उनका असुख सुनकर ठाकुर बड़े ही चिन्तित हैं। जभी एक भक्त ने श्रीयुक्त राम चैटर्जी के हाथ में आज दस रुपये। हृदय को भेजने के लिए दिए हैं। देते समय ठाकुर वहाँ पर उपस्थित नहीं थे। वे भक्त एक चुमकी घटि (गिलास, tumbler) लाए हैं,— ठाकुर ने कहा था 'यहाँ के लिए एक चुमकी घटि ले आओगे, भक्त लोग जल पिएँगे।'

मास्टर के मित्र हरिबाबू को प्राय: ग्यारह वर्ष हुए पत्नी-वियोग हुआ है। और विवाह नहीं किया। माँ, बाप, भाई, भगिनी सब हैं। उनके ऊपर स्नेह-ममता खूब है और उनकी सेवा करते हैं। आयु 28-29। भक्तों के आकर बैठ जाने पर ठाकुर मसहरी के बाहर हो गए। मास्टर

प्रभृति सभी ने भूमिष्ठ होकर प्रणाम किया। ठाकुर की मसहरी हटा दी गई। वे छोटी खाट पर बैठे हैं और बातें कर रहे हैं—

श्रीरामकृष्ण *(मास्टर के प्रति)*— मसहरी के भीतर ध्यान कर रहा था। सोचा, केवल एक ही रूप की कल्पना ही तो वे नहीं हैं, जभी अच्छा नहीं लगा। वे दप करके दिखला दें तो होता है। और फिर सोचा कि कौन ध्यान करता है, किसका ध्यान करता हूँ।

मास्टर— जी हाँ। आपने कहा था कि वे ही जीव-जगत इत्यादि सब बने हुए हैं— जो ध्यान करता है, वह भी वे हैं।

श्रीरामकृष्ण— और वे न करवाएँ तो फिर नहीं होगा। वे ध्यान करवाएँ तो ही ध्यान होगा। तुम क्या कहते हो?

मास्टर— जी, आप के भीतर 'आमि' (मैं) नहीं है तभी ऐसा होता है। जहाँ पर 'मैं' नहीं है वहाँ पर ऐसी अवस्था होती है।

श्रीरामकृष्ण— किन्तु 'मैं दास, सेवक' इतना-सा रहना अच्छा है। जहाँ पर 'मैं सब काम कर रहा हूँ' बोध होता है, वहाँ 'मैं दास, तुम प्रभु'— यह भाव खूब अच्छा है। सब ही किया जाता है, सेव्य-सेवक भाव रहना ही ठीक है।

'परब्रह्म क्या है' मणिमोहन सर्वदा इसी का चिन्तन कर रहे हैं। ठाकुर उसको लक्ष्य करके फिर कहते हैं—

श्रीरामकृष्ण— ब्रह्म है आकाशवत्। ब्रह्म के भीतर विकार नहीं है। जैसे अग्नि का कोई रंग नहीं है। किन्तु शक्ति से वे नाना रूप बन गए हैं। सत्त्व, रज, तम— ये तीनों गुण ही शक्ति के गुण हैं। आग में यदि सफेद रंग डाल दें तो सफेद दिखेगी। यदि लाल रंग डाल दो तो लाल दिखलाई देगी। यदि काला रंग डालें तो आग काली दिखलाई देगी। ब्रह्म— सत्त्व-रज-तम, तीनों गुणों के अतीत हैं। 'वे क्या हैं', मुख से नहीं कहा जाता। वे वाक्य के अतीत हैं। 'नेति-नेति' करते-करते जो बाकी रह जाता है और जहाँ आनन्द है, वही है ब्रह्म।

''एक कन्या के स्वामी आए हैं। दूसरे समवयस्क छोकरों के साथ बाहर के कमरे में बैठे हैं। इधर वह कन्या और उसकी समवयस्का सखियाँ जंगले में

से देख रही हैं। वे वर को पहचानती नहीं, वे कन्या से पूछती हैं— वही हैं क्या तुम्हारे वर? तब वह कुछ हँसकर कहती है, ना। दूसरे एक जन को दिखाकर कहती हैं— वही हैं क्या तुम्हारे वर? वह फिर कहती है— ना। अन्त में उसके स्वामी को लक्ष्य करके जिज्ञासा की— वही तुम्हारे वर? तब वह 'हाँ' भी नहीं बोली, 'ना' भी नहीं बोली, केवल 'फिक्' करके हँसकर चुप किए रही। तब समवयस्काओं ने समझा कि वही हैं उसके स्वामी। जहाँ ठीक ब्रह्मज्ञान है, वहाँ सब चुप।''

(सत्संग— गृही का कर्त्तव्य)

(मणि के प्रति)— ''अच्छा, मैं क्यों बोलता हूँ?''

मणि— आप जैसे कहते हैं, उबलते घी में यदि फिर कच्ची पूरी पड़ती है तो वह फिर छैं-छैं करके कल-कल करता है। भक्तों को चैतन्य होने के लिए आप बातें करते हैं।

ठाकुर मास्टर के साथ हाजरा महाराज की बातें करते हैं।

श्रीरामकृष्ण— सन्त-सज्जन का कैसा स्वभाव होता है, जानते हो? वह किसी को भी कष्ट नहीं देता, परेशान नहीं करता। निमन्त्रण पर जाता है। किसी-किसी का ऐसा स्वभाव होता है कि शायद कह देता है— मैं अलग बैठूँगा। ईश्वर पर सच्ची भक्ति रहने से पाँव बेताल नहीं पड़ता— किसी को मिथ्या कष्ट नहीं देता।

''फिर असज्जन का संग अच्छा नहीं। उनसे कुछ दूर रहना चाहिए। अपने को बचाकर चलना चाहिए। *(मणि के प्रति)* तुम क्या कहते हो?''

मणि— जी, असज्जन के संग मन बड़ा नीचे गिर जाता है। किन्तु आपने कहा था कि वीर की बात अलग है।

श्रीरामकृष्ण— कैसे?

मणि— कम आग में थोड़ी-सी लकड़ी सरका देने पर आग बुझ जाती है। आग जब धूँ-धूँ करके जल रही हो तब केले का पेड़ फेंक देने पर भी कुछ

नहीं होता। केले का वृक्ष जलकर भस्म हो जाता है।

ठाकुर मास्टर के मित्र हरिबाबू की बात पूछते हैं।

मास्टर— ये आप का दर्शन करने आए हैं। इनकी पत्नी बहुत दिन हुए चल बसी हैं।

श्रीरामकृष्ण— तुम क्या करते हो जी?

मास्टर— एक प्रकार से कुछ नहीं करते। किन्तु घर में भाई-बहन, बाप-माँ हैं। उनकी खूब सेवा करते हैं।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— यह क्या? तुम तो 'कुमड़ोकाटा बड़े ठाकुर' (कद्दू काटने वाले ताऊजी) हो गए। तुम न संसारी, न हरिभक्त। यह ठीक नहीं। किसी-किसी घर में एक पुरुष रहता है— लड़के-लड़कियाँ लेकर रात-दिन रहता है, और बाहर के कमरे में बैठा गुड़-गुड़ करके हुक्का पीता रहता है। निष्कर्म बैठा रहता है। किन्तु अन्दर घर में जाकर कभी-कभी कद्दू काट देता है। औरतें कद्दू नहीं काटतीं, इसलिए लड़कों द्वारा बुलवा लेती हैं कि बड़े ताऊजी को बुला ला। वे कद्दू के दो टुकड़े कर देंगे। तब वह कद्दू के दो टुकड़े कर देता है, उस पुरुष का बस इतना ही काम है। जभी तो नाम ही हो गया है 'कद्दू काटने वाले ताऊजी'।

''तुम यह भी करो— वह भी करो। ईश्वर के पादपद्मों में मन रखकर संसार का कार्य करो। और जब अकेले रहो तो भक्ति-शास्त्र पढ़ो— 'श्रीमद्भागवत' या 'चैतन्य-चरितामृत' इत्यादि।''

रात के प्राय: दस बज गए हैं। अभी भी श्री काली-मन्दिर बन्द नहीं हुआ। मास्टर ने बड़े आँगन में से राय चैटर्जी महाशय के संग बातें करते-करते जाकर पहले श्री राधाकान्त के मन्दिर में, फिर माँ काली के मन्दिर में प्रणाम किया। चाँद उदित हुआ, श्रावण की कृष्णा द्वितीया— प्रांगण, मन्दिर-शीर्ष, अति सुन्दर दिखाई दे रहा है।

ठाकुर के कमरे में लौट कर मास्टर ने देखा— ठाकुर खाने के लिए बैठ रहे हैं। दक्षिणास्य बैठे। आहार में थोड़ी-सी सूजी का पायस और

दो-एक पूरियाँ हैं। कुछ देर बाद मास्टर और उनके मित्र ने ठाकुर को प्रणाम करके विदा ली। आज ही कलकत्ता लौटेंगे।

द्वितीय परिच्छेद

(गुरु-शिष्य-संवाद— गुह्य कथा)

ठाकुर श्रीरामकृष्ण अपने उसी पूर्वपरिचित कक्ष में छोटी खाट पर बैठे मणि के साथ अकेले में बातें कर रहे हैं। मणि फर्श पर बैठे हैं। आज शुक्रवार, 7 सितम्बर, 1883 ईसवी, भ्राद्र शुक्ल षष्ठी तिथि, रात के लगभग साढ़े सात बजे हैं।

श्रीरामकृष्ण— उस दिन कलकत्ता गया था। गाड़ी में जाते-जाते देखा, जीव सब निम्नदृष्टि! सब को ही पेट की चिन्ता! सब पेट के लिए दौड़ रहे हैं! सबका ही मन है कामिनी-काञ्चन में! किन्तु दो-एक को देखा ऊर्ध्वदृष्टि— ईश्वर की ओर मन है।

मणि— आजकल पेट की चिन्ता और बढ़ा रहे हैं। अंग्रेज़ों का अनुकरण करने से लोगों का विलास की ओर और भी मन हो गया है। जभी अभाव बढ़ गया है।

श्रीरामकृष्ण— उनका ईश्वर के सम्बन्ध में क्या मत है?

मणि— वे निराकारवादी हैं।

[पूर्वकथा— श्रीरामकृष्ण का ब्रह्मज्ञान की अवस्था में अभेददर्शन— अंग्रेज़, हिन्दु, अन्त्यज जाति (depressed classes) पशु, कीट, विष्ठा, मूत्र— सर्वभूतों में एक चैतन्य-दर्शन]

श्रीरामकृष्ण— हमारे यहाँ पर भी वही मत है।

कुछ काल दोनों जन ही चुप रहे। ठाकुर अब अपने ब्रह्मज्ञान की अवस्था का वर्णन करते हैं।

श्रीरामकृष्ण— मैंने एक दिन देखा, एक चैतन्य— अभेद। प्रथम दिखाया बहुत से मनुष्य, जीव, जन्तु हैं— उनके भीतर बाबू भी है, अंग्रेज़, मुसलमान, मैं स्वयं, चण्डाल (शव जलाने वाला), कुत्ता, एक लम्बी दाढ़ी वाले मुसलमान के हाथ में एक प्लेट (सानकि) है, उसमें भात है। उसने उसी सानकि का भात सबके मुख में थोड़ा-थोड़ा-सा दिया, मैंने भी तनिक-सा चखा!

"और एक दिन दिखाया— विष्ठा, मूत्र, अन्न, व्यंजन सब प्रकार की खाने की वस्तुएँ— सब पड़ी हैं। हठात् भीतर से एक जीवात्मा ने बाहर निकल कर अग्निशिखा की भाँति सब चख लिया! मानो जिह्वा से लक्-लक् करते हुए सब वस्तुओं का एक बार स्वाद ले लिया— विष्ठा, मूत्र सब चख लिया! दिखाया सब एक— अभेद!"

(पूर्वकथा— पार्षदगण-दर्शन— ठाकुर क्या अवतार?)

श्रीरामकृष्ण *(मणि के प्रति)*— और फिर एक बार दिखाया कि यहाँ के ये सब भक्त हैं, पार्षद— अपने जन। जयोंहि आरती का शंख, घण्टा बज उठता त्योंहि कोठी की छत के ऊपर चढ़कर व्याकुल होकर चीत्कार करके कहता, 'ओ रे तुम लोग कौन कहाँ पर हो, आओ! तुम लोगों को देखने के लिए मेरा प्राण जा रहा है।'

"अच्छा, मेरे इन सब दर्शन आदि के विषय में तुम्हें कैसा लगता है?"

मणि— आप हो उनके विलास का स्थान! यही समझा हूँ— आप यन्त्र हैं, वे यन्त्री, सब जीवों को मानो उन्होंने कल (मशीन) में डालकर तैयार किया है, किन्तु आप को उन्होंने निज हाथों से गढ़ा है।

श्रीरामकृष्ण— अच्छा, हाजरा कहता है, दर्शन के पश्चात् षड़ैश्वर्य होता है।

मणि— जो शुद्ध भक्ति चाहते हैं, वे ऐश्वर्य देखना नहीं चाहते।

श्रीरामकृष्ण— बोध होता है कि हाजरा और जन्म में दरिद्र था, जभी इतना ऐश्वर्य देखना चाहता है। हाजरा अब और भी कहता है, रसोइये के साथ मैं

क्या बात करूँ! और कहता है, मैं खजान्ची से कहकर तुम्हें वे सब चीजें दिलवा दूँगा! *(मणि का उच्च हास्य)*।

(सहास्य)— ''वह ऐसी ही सब बातें कहता रहता है और मैं चुप किए रहता हूँ।''

(मनुष्य अवतार, भक्त की सहज धारणा होती है—
ऐश्वर्य और माधुर्य)

मणि— आपने तो अनेक बार कह दिया है, जो शुद्ध भक्त है वह ऐश्वर्य देखना नहीं चाहता। जो शुद्ध भक्त है, वह ईश्वर का गोपालभाव देखना चाहता है। पहले ईश्वर चुम्बक पत्थर होते हैं और भक्त सूई होता है। अन्त में भक्त ही चुम्बक पत्थर हो जाता है और ईश्वर सूई बन जाते हैं अर्थात् भक्त के निकट ईश्वर छोटे हो जाते हैं।

श्रीरामकृष्ण— जैसे ठीक सूर्योदय के समय का सूर्य। उस सूर्य को अनायास देख सकता है। चक्षु झुलसते नहीं, वरन् चक्षु की तृप्ति होती है। भक्त के लिए भगवान का नरम भाव हो जाता है, वे ऐश्वर्य-त्याग करके भक्त के पास आते हैं।

दोनों जने फिर चुप रहे।

मणि— ये सब दर्शन, सोचता हूँ, क्यों सत्य नहीं होंगे? यदि ये सब असत्य हैं तब तो यह संसार और भी असत्य है। क्योंकि यन्त्र मन तो एक ही है। वे सब दर्शन शुद्ध मन में हो रहे हैं और संसार की वस्तु इसी मन से दिखाई दे रही है।

श्रीरामकृष्ण— अब देख रहा हूँ, तुम्हें खूब अनित्य-बोध हो गया है! अच्छा बताओ हाजरा कैसा है?

मणि— वह एक प्रकार का व्यक्ति है! *(ठाकुर का हास्य)*।

श्रीरामकृष्ण— अच्छा, मेरे संग और कोई मिलता है?

मणि— जी नहीं।

श्रीरामकृष्ण— किसी परमहंस के संग में?

मणि— जी नहीं। आपकी तुलना नहीं।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— 'अचीने गाछ' सुना है?

मणि— जी, नहीं।

श्रीरामकृष्ण— वह एक प्रकार का वृक्ष है, उसको कोई देखकर पहचान नहीं सकता।

मणि— जी, आपको भी पहचाना नहीं जाता। आपको जो जितना समझेगा, वह उतना ही उन्नत होगा!

मणि चुपचाप सोच रहे हैं— ठाकुर ने 'सूर्योदय का सूर्य' और 'अचीने गाछ', ये सब बातें जो कही हैं क्या इसी का नाम है अवतार? क्या इसी का नाम है 'नरलीला'? ठाकुर क्या अवतार हैं? तभी पार्षदों को देखने के लिए व्याकुल होकर कोठी की छत पर खड़े होकर पुकारते थे— ''ओ रे तोरा के कोथाय आछिस् आय?'' (ओ रे तुम सब कहाँ हो? आओ ना!)